Chapter 8

bihar board class geography Notes – मानचित्र अध्ययन

मानचित्र अध्ययन

महत्वपूर्ण तथ्य-

पृथ्वी की आकृति गोलाकार होने के कारण इसका मानचित्र बनाना आसान नहीं होता है, अतः मानचित्र बनाने के लिए मापनी का विकास किया जाता है । मापनी वह विधि है जिसके द्वारा समस्त पृथ्वी अथवा उसके किसी एक भाग को मानचित्र पर बनाकर प्रदर्शित किया जाता है । इसलिए दो बिन्दुओं की वास्तविक धरातलीय धूरी को मानचित्र पर दिखाने की प्रक्रिया को मापक कहते हैं ।

मापक की उपयोगिता-धरातलीय दूरी को सही प्रदर्शित करना, किसी क्षेत्रफल की जानकारी प्राप्त करना, बड़े धरातल को छोटे आकार में प्रदर्शित करना, भू-सर्वेक्षण आदि में है। मापक प्रदर्शित करने की विभिन्न विधियाँ हैं- कथन विधि, प्रदर्शक विधि तथा रैखिक मापक विधि ।

(i) कथन विधि-इस विधि में मापक को एक कथन द्वारा व्यक्त किया जाता है । जैसे-1 सेमी 25 किमी या 1 इंच = 18 मील आदि ।

(ii) प्रदर्शक भिन्न-मानचित्र की दूरी को और धरातल की दूरी को एक भिन्न के रूप में प्रकट करने की विधि को प्रदर्शक भिन्न कहते हैं । प्रदर्शक को विश्व के किसी भी देश की मापन प्रणाली के अनुसार बदलकर प्रयोग किया जा सकता है । इसलिए इसे अन्तर्राष्ट्रीय मापक कहते हैं।

(iii) रैखिक मापक-इस विधि को सरल मापक विधि कहते हैं । इस रेखा को मूल तथा ज्यामितीय विभागों में विभक्त किया जाता है । विभाजित रेखा का मूल्यांकन मूल भाग को छोड़कर किया जाता है अर्थात् अंक बाएँ तरफ से मूल भाग को छोड़कर अंकित किए जाते हैं ।

तुलनात्मक मापक-तुलनात्मक मापक में एक या एक से अधिक माप प्रणालियों में दूरियाँ प्रदर्शित की जाती हैं । कभी-कभी इसमें दो भिन्न तत्वों को भी प्रदर्शित किया जाता है । जैसे दूरी एवं समय को साथ-साथ दर्शाया जाता है । इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके द्वितीयक
और प्राथमिक मापक की शुरुआत एक ही संदर्भ रेखा अर्थात् शून्य से होता है ।

कर्णवत् मापक-साधारण मापक में किसी ईकाई का दसवाँ भाग अथवा इकाई का दूसरा भाग प्रदर्शित करते हैं । यदि किसी ईकाई के सौवें अथवा तीसरे भाग का प्रदर्शन करना है तो हम कर्णवत् अथवा विकर्णी मापक का सहारा लेते हैं।

मापक दो प्रकार के होते हैं-लघु मापक तथा दीर्घ मापक ।

लघु मापक-इसमें एक सेमी कई किमी के बराबर प्रदर्शित होता है, जैसे 1 से.मी.मी. । इसका आशय है कि मानचित्र 1 से.मी. की दूरी धरातल की 5 कि.मी. की दूरी के बराबर
=5कि.है। अधिकांश दीवार मानचित्र लघु मापक पर आधारित होता है ।

दीर्घ मापक-इसमें 1 कि.मी. को कई से.मी. में प्रदर्शित किया जाता है जैसे-5 से.मी. = 1किमी । इसका आशय है कि मानचित्र की 5 से.मी. की दूरी पृथ्वी की 1 किमी की दूरी को प्रदर्शित करती है । दीर्घ मापक पर छोटी-छोटी दूरियाँ प्रदर्शित करने में आसानी होती है । शहरों एवं गाँवों
का मानचित्र दीर्घ मापक पर बनते हैं । दीर्घ मापक पर छोटी-छोटी दूरियों को भी पूर्ण जानकारी के साथ प्रदर्शित करने में सुविधा होती है । नगर नियोजन तथा भू आयोग मानचित्र दीर्घ मापक पर ही बनते हैं।

https://www.evidyarthi.in/